3

# नई दुनिया के लिए 'तालीम'

ऋषभ कुमार मिश्र*

महात्मा गांधी ने नई तालीम को अपनी अंतिम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन कहा है। प्रायः नई तालीम का ऐतिहासिक मूल्यांकन किया जाता है और इसमें निहित विचारों की सराहना की जाती है। यह लेख नई तालीम के सिद्धांत पर संचालित आनंद निकेतन विद्यालय के अभ्यासों द्वारा नई तालीम के शिक्षणशास्त्रीय पक्ष को उजागर करता है। आनंद निकेतन विद्यालय के आख्यान नयी तालीम द्वारा 'नई दुनिया' की ओर बढ़ते कदम का प्रमाण है।

महात्मा गांधी ने शिक्षा के द्वारा अहिंसा आधारित, न्यायमूलक, धर्म-निरपेक्ष और लोकतांत्रिक भागीदारी वाले समाज का स्वप्न देखा था। इस सपने को साकार करने की सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि कैसे समाज के हर वर्ग, क्षेत्र, पंथ और भाषायी समुदायों के बच्चों का शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास हो (साइक्स, 2014)। 'आधुनिक' तरह के स्कूल इस रास्ते की सबसे बड़ी बाधा थे। वे केवल समर्थ और शक्तिसंपन्न लोगों की ज़रूरतों को पूरा कर रहे थे (कृपलानी, 1957)। वे राज्य की ज़रूरत के मुताबिक नौकरी के लिए लोगों को तैयार कर रह थे। स्वावलंबन, सहकार और श्रम की प्रतिष्ठा जैसे मूल्यों से उनका कोई लेना-देना नहीं था। शिक्षा का माध्यम और विषयवस्तु दोनों का विद्यार्थी के संदर्भ से कोई वास्ता नहीं था। कमोबेश यही स्थिति आज भी है। इन परिस्थितियों के पार एक 'नई दुनिया' के लिए गांधी जी ने शिक्षा का देशज विकल्प दिया। गांधी जी की यह नई तालीम दस्तकारी के द्वारा मातृभाषा के माध्यम से स्वावलंबी नागरिक और सर्वोदयी समाज के लिए थी (शिवदत्त, 2012)। यह विकल्प केवल वैचारिक नहीं था, बल्कि इसके आधार पर पूरे भारत में महत्वपूर्ण प्रयोग हुए। दुर्भाग्य यह है कि इन प्रयोगों को परिपक्व होने के पहले ही आलोचना का सामना करना पड़ा। परिणाम यह रहा कि आज़ाद हिंदुस्तान के लिए महात्मा गांधी की महत्वपूर्ण देन 'नई तालीम' अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकी। फिर भी यह छोटे पैमाने के प्रयोगों में आज भी ज़िंदा है। यह व्यक्ति और समाज के लिए अपनी भूमिका का निर्वाह कर रही है।

वर्ष 2019 में भी नई तालीम के सिद्धांतों के आधार पर संचालित आनंद निकेतन विद्यालय सर्वोदय समाज के स्वप्न को साकार करने में लगा हुआ है। यह विद्यालय सेवाग्राम आश्रम परिसर में

**सहायक प्रोफ़ेसर*, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा 442001

स्थित है। इसी परिसर में वर्ष 1937 में महात्मा गांधी ने 'नई तालीम' के विचार का प्रतिपादन किया था। यहाँ वर्ष 1938 में आनंद निकेतन नाम से एक विद्यालय आरंभ हुआ। वर्ष 1976 में यह विद्यालय बंद हो गया (शिवदत्त, 2012)। वर्ष 2005 से नयी तालीम समिति ने इसे पुन: आरंभ किया। इस समिति में आनंद निकेतन से पढ़े पुराने विद्यार्थी, सर्वोदयी कार्यकर्ता और स्थानीय स्तर पर महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम से जुड़े लोग शामिल हैं। इस विद्यालय के पास नई तालीम के प्रयोगों की विरासत है, जिसने 21वीं सदी में विद्यालय को नयी गति और ऊर्जा दी। इस विद्यालय को महात्मा गांधी और विनोबा भावे के विचारों से प्रेरित शिक्षकों का दल संचालित करता है। ये शिक्षक अपनी भूमिका को केवल विषय के पढ़ाने वाले के रूप में ही नहीं देखते, बल्कि वे स्वयं गांधी मार्ग को अपनाते हैं और बच्चों सहित समुदाय को इससे परिचित कराते हैं। विद्यालय आत्मनिर्भरता के सिद्धांत पर संचालित है। स्कूल की माली हालत बहुत अच्छी तो नहीं है, परंतु स्कूल हर कीमत पर शिक्षा की संरचना और व्यवस्था में पवित्रता को कायम रखना चाहता है। ऐसे अनेक उदाहरण यहाँ के शिक्षकों, विद्यार्थियों और कर्मचारियों में देखे जा सकते हैं, जोकि प्रमाण हैं कि यहाँ की आबोहवा में गांधीवादी मूल्य घुले हुए हैं।

किसी भी आदर्श लोकतांत्रिक और प्रगतिशील विद्यालय के समान यहाँ बच्चे के अनुभवों को केंद्र में रखकर आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। यह शिक्षा इस मायने में अलग है कि बौद्धिक विकास के बराबर ही शारीरिक और नैतिक विकास को तरजीह दी जाती है। दिन का आरंभ और अंत स्कूल परिसर की सफ़ाई के साथ होता है। बच्चे और शिक्षक मिलकर साथ-साथ सफ़ाई करते हैं। इनमें पद या सत्ता के आधार पर कोई अंतर नहीं होता है। सफ़ाई के काम में पुनर्चक्रण का ध्यान रखा जाता है। कोशिश होती है कि किसी भी जीव या प्रकृति को हानि न हो या फिर कम से कम हो। इसका एक उदाहरण यह है कि कीट-पतंगों से बचाव के लिए भी ऐसे कीटनाशक का प्रयोग होता है जो उन्हें भगा दे, लेकिन नष्ट न करे। बच्चों को खुद की सफ़ाई और स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना सिखाया जाता है। इसका प्रभाव बच्चों के ज़रिए उनके समुदाय तक पहुँचता है। कई अभिभावकों ने बताया कि बच्चे सफ़ाई के जिन तरीकों और उपायों को सीखते हैं, उसे घर पर भी अपनाते हैं। इसी तरह स्कूल नैतिक विकास के लिए स्वाभाविक वातावरण उपलब्ध कराता है। यहाँ नैतिक शिक्षा जैसा न तो कोई विषय है और न ही पढ़ाई का कोई घंटा। शिक्षक-विद्यार्थी का आपसी व्यवहार ही इसका आधार है। एक बार इस विद्यालय का एक प्रशिक्षु-अध्यापक इस बात से चिंतित था कि उसने अपने पाठ को तैयार नहीं किया। उसके पर्यवेक्षक नाराज़ होंगे। उसकी इस चिंता को देखकर आनंद निकेतन के एक विद्यार्थी ने कहा कि उसे अपने पर्यवेक्षक से सत्य बोलना चाहिए। कारण पूछने पर कहा कि सत्य से आत्मबल आता है। यह बच्चा आठवीं कक्षा का छात्र था। ऐसे 'आत्मबली' विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक पूँजी का अभाव है। यहाँ आने वाले ज़्यादातर बच्चे दलित और आदिवासी समुदाय से हैं, जो आस-पास के गाँवों से आते हैं। बच्चों की सामाजिक पृष्ठभूमि

शिक्षकों और विद्यालय के लिए दोहरी चुनौती प्रस्तुत करती है। स्कूल को न तो बच्चों के घर से अपेक्षित सहयोग मिलता है जो सीखने-सिखाने में मददगार हो, न ही विद्यालय को संसाधन संपन्न करने के लिए अभिभावकों की ओर से कोई सार्थक सहयोग मिलता है। फिर भी यह स्कूल नई तालीम के लक्ष्यों के अनुरूप स्वावलंबी, आलोचनात्मक विवेक वाले नागरिकों की तैयारी के लिए समर्पित है। स्कूल के इस लक्ष्य की सराहना अभिभावक भी करते हैं। उनका मानना है कि आनंद निकेतन की पढ़ाई बच्चों को तनाव और दबाव से मुक्त रखती है। इनमें यह संतुष्टि है कि उनका पाल्य 'अच्छा इंसान' बन रहा है। इसके प्रमाण में वे बच्चे के आत्मानुशासन का उदाहरण देते हैं। स्थानीय संसाधनों और शिल्प के माध्यम से यह विद्यालय ज्ञान और कर्म के समन्वय का अनूठा उदाहरण है। यहाँ सीखना 'ज्ञान प्राप्ति के लिए' नहीं, बल्कि अपने अनुभवों, जीवन और समाज के अन्वेषण और उसे बेहतर बनाने के लिए है।

क्या आप ऐसे किसी स्कूल की कल्पना कर सकते हैं, जो वर्ष 2019 में अपने बच्चों को विज्ञान, गणित और भाषा सिखाने के लिए खेती का सहारा लेता हो? आनंद निकेतन स्कूल में यह सफल प्रयोग किया जा रहा है। स्कूल में बच्चों को खेती का काम इसलिए नहीं सिखाया जाता कि इन्हें किसान बनाना है और न ही ऐसे किसी बोध को पुख़्ता करना है कि वे जिस पृष्ठभूमि से आते हैं, उसके कारण खेती-किसानी के अलावा उनके पास कोई और विकल्प नहीं है। खेती बच्चे के घर और आस पड़ोस में होने वाली ऐसी गतिविधि है, जिससे बच्चे, अध्यापक और समुदाय के साथ घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं। स्कूल ने इसी गतिविधि को केंद्र में रखकर बच्चों को ऐसा सशक्त नागरिक बनाने की पहल की है जो व्यक्ति, समाज और कुदरत के रिश्ते को समझें। यह समझ उन्हें केवल ऐसा 'वैज्ञानिक ज्ञान' नहीं देती जो पैदावार को अधिक करने की समझ दे, बल्कि खेती के समाज और अर्थव्यवस्था से बदलते संबंध को जानने का मौका भी देती है। शुरुआत कुदरत को अनुभव करने से होती है। एक बड़े ज़मीन के टुकड़े में जब विद्यार्थियों का दल, खेती के औज़ार सहित पहुँचता है, तो वह किसी आक्रमणकारी की तरह उस ज़मीन के टुकड़े पर हमला नहीं करता, बल्कि सबसे पहले उस टुकड़े की जैव-विविधता, मृदा की जीवन-दायिनी शक्ति से परिचित होता है। प्रथमतः यह परिचय उसे प्रकृति के प्रति संवेदनशील करता है। उसे मिट्टी के पोषक तत्वों, जीव-जातियों और वानस्पतिक जातियों की जानकारी दी जाती है। किताब के बदले प्रकृति के पृष्ठ-दर-पृष्ठ पढ़े जाते हैं। कौन-सा मौसम, तापमान, आर्द्रता, दाब आदि की क्या स्थितियाँ हैं, कैसे बदलाव हो रहे हैं? इसका क्या संभावित परिणाम हो सकता है? इसकी चर्चा के साथ खेत की तैयारी प्रारंभ की जाती है। यह चर्चा पूर्णतया आनुभविक और प्रयोगात्मक होती है। यहाँ विद्यार्थी खुद से तापमान, आर्द्रता और दाब के आँकड़े दर्ज करते हैं तथा उसी आधार पर निर्णय लेते हैं। खेती विद्यार्थियों में सहकार और सामुदायिकता के भाव को पोषित करती है। बच्चे एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करते हैं। क्यारी बनाना हो, पौधों को पानी देना हो, उसकी कटाई-छटाई हो या पैदावार आदि में पारस्परिक भाव ही देखने को मिलता है। इस

तरह से खेती के काम में भागीदारी श्रम की प्रतिष्ठा और सह-अस्तित्व के भाव से प्रेरित होती है। इसके माध्यम से सीखना किसी कृत्रिम या अपरिचित दुनिया की सूचना को रटना न होकर अपनी परिचित दुनिया के रास्ते विज्ञान, समाज विज्ञान, गणित और भाषा की खोज करना है। उदाहरण के लिए, छोटी कक्षाओं में विद्यार्थी माप-जोख के आधार पर खेतों का निर्माण करते हैं। बड़ी कक्षाओं के बच्चे जटिल संक्रियाओं, जैसे — प्रतिशत और लाभ-हानि की गणना करते हैं। इसी तरह खेती के माध्यम से वे किसान आंदोलनों के इतिहास और वर्तमान को समझते हैं। वे किसी भी अर्थव्यवस्था और जलवायु परिर्वतन जैसे मुद्दों पर चर्चा करते हैं। किसानों और खेती की उपेक्षा के इस दौर में यह माहौल संतोष देता है कि कोई तो है, जिसके लिए खेती जीवन का आधार है। जो बौद्धिक विमर्श और नकली चिंता जताने के बदले सार्थक हस्तक्षेप के लिए तैयार हो रहा है। ऐसी ही पीढ़ी किसानों के साथ तदानुभूति का भाव रखेगी। वे खेती के काम को उपेक्षित या शिक्षित न होने का परिणाम नहीं मानेगी। वे तो खेती की वैज्ञानिकता और उसके निहित सौंदर्यबोध की प्रशंसा करेंगे। वे गाँव, किसान और बाज़ार के रिश्ते को समझेंगे। इस तरह से अपने संदर्भ और संस्कृति से कटने के बजाय वे उसके बारे में सजग रहने वाले नागरिक बनेंगे। उनमें सामाजिक सच्चाइयों से भागने के बदले लड़ने और जूझने की ताकत पैदा होगी। इस ताकत का आधार स्वावलंबन होगा। ऐसे ही एक स्वावलंबी विद्यार्थी ने अपनी भविष्य की योजना साझा करते हुए कहा कि वह आगे चलकर जैविक खेती करने वाला किसान बनना चाहता है। अपनी इस योजना का लक्ष्य बताते हुए उसने कहा कि वह चाहता है कि उसके गाँव के लोगों के लिए खेती मज़बूरी न होकर एक मज़बूत साधन हो। विद्यार्थी के इस विचार में उसके 'आत्म बोध' के साथ सहकार और सामुदायिकता के भाव को देख सकते हैं।

इस विद्यालय के बच्चों में स्वावलंबन का बोध उनके आत्मबल का स्रोत है। यहाँ स्वावलंबन की शिक्षा न तो बाह्य उपदेशों के आधार पर है न ही दंडात्मक अनुशासन के दबाव में। बच्चों को अपने शिक्षकों में स्वावलंबी होने का आदर्श देखने को मिलता है। जब वे अपने शिक्षकों को खुद अपने कमरे और बरामदे साफ़ करते देखते हैं तो उनके लिए यह स्वावलंबन का पहला पाठ होता है। जब वे अपने और अपने साथियों के लिए दोपहर का भोजन तैयार करते हैं तो उनमें कुछ करने का बोध मज़बूत होता है। जब वे अपनी उगायी फ़सल से कुछ पैसे कमाते हैं तो आर्थिक स्वायत्तता का पाठ पढ़ते हैं। जब वे शिक्षक दिवस पर अपने हाथों से सिली हुई शर्ट पहनते हैं तो वे आत्मनिर्भरता के सुख का आनंद लेते हैं। दस्तकारी के इन कामों में लगे रहने वाले ये बच्चे अपने हमउम्र अन्य स्कूल के बच्चों जैसे डॉक्टर, इंजीनियर या अधिकारी बनना चाहते हैं। इनके सपने इस अर्थ में विलक्षण हैं कि वे किसी उद्धारक का इंतज़ार नहीं कर रहे हैं, किसी मुक्तिदाता की प्रतीक्षा में नहीं है, उन्हें किसी प्रतियोगिता में शामिल नहीं होना है, उन्हें किसी सामाजिक-आर्थिक सीढ़ी की कड़ी बनने का उतावलापन नहीं है। वे जीवन की स्वाभाविक गति के साथ जीवन की संभावनाओं को स्वीकार रहे हैं। उनकी ये संभावनाएँ सुविधाभोगी बचपन की तरह

सजायी-सँवारी नहीं जा रही हैं। वे अपने परिवार की रोज़मर्रा की चुनौतियों के साथ पल-बढ़ रहे हैं। अपने पैरों पर खड़ा होना उनका लक्ष्य है, लेकिन वे भेड़चाल में शामिल होना नहीं चाहते हैं। उनमें नौकरियों के प्रति आकर्षण है, लेकिन वे उचित-अनुचित का भेद भी कर पा रहे हैं। इस विद्यालय का हर बच्चा अपने आज के सीखे हुए स्वावलंबन से आत्मनिर्भर और स्वायत्त भविष्य के लिए निश्चिंत है। अपनी ताकत को जानना, दूसरों की ताकत की सराहना करना और दोनों के संयोजन से बेहतर प्रदर्शन करना, यहाँ के बच्चों और शिक्षकों के व्यवहार में देखा जा सकता है। ऐसी ही तालीम की कल्पना महात्मा गांधी और विनोबा भावे ने की थी, जिसे आनंद निकेतन स्कूल साकार कर रहा है।

## संदर्भ


कुमार, कृष्ण. 1999. मोहनदास करमचंद गांधी (1869–1948). *प्रोस्पेक्ट्स — द क्वाटरली रिव्यू ऑफ़ एजुकेशन*. वॉल्यूम 23, अंक 3. यूनेस्को इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ एजुकेशन, पेरिस.

कृपलानी, जे. बी. 1957. *द लेटेस्ट फैड बेसिक एजुकेशन*. हिंदुस्तानी तालीम संघ, वर्धा.

साइक्स, मार्जरी. 2014. *नई तालीम की कहानी*. गांधी सेवा संघ, वर्धा.

शिवदत्त. 2012. *नई तालीम — एक विहंगावलोकन*. नई तालीम समिति, सेवाग्राम.